



विविध समाचार



चीन का नाम लेकर सोनम वांगचुक ने मोदी सरकार पर लगाया बड़ा आरोप, दिल्ली से लेकर लेह तक मची खलबली!

नयी दिल्ली २४/१० (संवाददाता): लद्दाख के मुद्दे पर केंद्र सरकार और स्थानीय नेतृत्व के बीच टकराव एक बार फिर खुलकर सामने आ गया है। सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने बीजेपी सरकार पर वादाखिलाफी का आरोप लगाते हुए कहा है कि एक तरफ चीन लद्दाख पर दबाव बना रहा है और उसे भारत का हिस्सा मानने तक से इकार कर रहा है, तो दूसरी तरफ अपने ही देश में लद्दाख के लोगों को उनके हक के लिए लड़ना पड़ रहा है। वांगचुक का आरोप है कि केंद्र सरकार उन वादों से पीछे हट रही है, जिनके भरोसे लद्दाख के लोगों ने बातचीत के जरिए समाधान की उम्मीद लगाई थी। उन्होंने सवाल उठाया कि जब सीमाओं पर चुनौती बढ़ रही है, तब लद्दाख के लोगों का भरोसा जीतने के बजाय उन्हें निराश ज्यों किया जा रहा है? दरअसल, लद्दाख के नेताओं और केंद्रीय गृह मंत्रालय के अधिकारियों के बीच 22 अक्टूबर को दिल्ली में प्रस्तावित बातचीत नहीं हो सकी। वांगचुक इसी उज्ज्मीद में दिल्ली



पहुंचे थे कि केंद्र सरकार के साथ वार्ता के जरिए लंबे समय से लंबित मांगों पर कोई समाधान निकल सकता है। हालांकि, उन्हें बाद में जानकारी मिली कि बैठक नहीं हो रही है। इससे नाराज वांगचुक ने केंद्र सरकार पर वादों से पीछे हटने का आरोप लगाया और उज्ज्मीद जताई कि बातचीत जल्द दोबारा शुरू होगी। वांगचुक ने एक वीडियो संदेश में कहा कि 15 अक्टूबर को लेह में हुई वार्ता पूरी तरह विफल रही थी। उनके मुताबिक, उस बैठक में कोई ठोस नतीजा नहीं निकल सका,

ज्योंकि केंद्र सरकार पहले किए गए वादों पर आगे बढ़ने को तैयार नहीं दिखी। उन्होंने कहा कि इसके बाद 22 अक्टूबर को दिल्ली में अगली बैठक की बात कही गई थी, जिसके आधार पर उन्होंने दिल्ली आने की तैयारी की, लेकिन अब बातचीत स्थगित होने की जानकारी दी गई। हम आपको याद दिला दें कि लद्दाख के प्रतिनिधियों और केंद्रीय गृह मंत्रालय के अधिकारियों के बीच 15 अक्टूबर को हुई बैठक में भी कोई महत्वपूर्ण सहमति नहीं बन पाई थी।

इससे पहले 22 मई को हुई बातचीत में कुछ प्रमुख मुद्दों पर सहमति बनने की उज्ज्मीद जगी थी। उस दौरान लद्दाख के प्रतिनिधियों ने अपनी मांगों में नरमी दिखाते हुए क्षेत्र की पहचान, जमीन और रोजगार की सुरक्षा के लिए केंद्र की ओर से प्रस्तावित विशेष संवैधानिक व्यवस्था पर विचार करने की सहमति जताई थी। हालांकि, अक्टूबर की बैठक में विवाद उस समय बढ़ गया, जब लद्दाख के प्रतिनिधियों ने केंद्र सरकार के प्रस्तावित विधायी ढांचे पर सवाल उठाए। उनका कहना था

कि प्रस्तावित विधानसभा के पास पर्याप्त अधिकार नहीं होंगे और उसकी शक्तियां मौजूदा पर्वतीय स्वायत्त परिषदों जैसी सीमित रह सकती हैं। गृह मंत्रालय की ओर से 32 पन्नों का मसौदा प्रस्ताव पेश किए जाने के बावजूद लद्दाख के प्रतिनिधियों ने इसे स्वीकार नहीं किया। वांगचुक ने कहा कि लद्दाख के लोगों को छठी अनुसूची के तहत संवैधानिक संरक्षण देने की मांग सबसे पहले उठाई गई थी। इसके बाद विधानसभा और अधिकारों से जुड़े अन्य आश्वासन भी दिए गए, लेकिन अब इन मुद्दों पर प्रगति नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि सीमावर्ती क्षेत्र में रहने वाले लोग मौजूदा हालात से निराश हैं और उन्हें अपने भविष्य को लेकर चिंता सता रही है। बहरहाल, अब सवाल यह है कि ज्वा केंद्र और लद्दाख के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत फिर शुरू होगी और ज्वा दोनों पक्ष किसी ठोस समाधान तक पहुंच पाएंगे? फिलहाल, वार्ता में देरी ने लद्दाख के मुद्दे को एक बार फिर राजनीतिक और संवैधानिक बहस के केंद्र में ला दिया है।

नयी दिल्ली २४/१० (संवाददाता): भारतीय जनता पार्टीने बीकानेर हाउस में रेहान वाड़ा की प्रदर्शनी को लेकर गांधी परिवार के भाई-बहन (प्रियंका और राहुल) पर सवाल उठाए हैं। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड़ा के बेटे रेहान वाड़ा को बीकानेर हाउस द्वारा भेजे गए एक नोटिस को साझा करते हुए, प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कहा कि उनके परिवार के दबाव में बाद में कुछ राजनीतिक तस्वीरें प्रदर्शनी में शामिल कर दी गई थीं। इस पर बीकानेर हाउस ने 21 अक्टूबर को इन तस्वीरों को हटाने के लिए कहा। बीजेपी प्रवक्ता ने %३३% पर एक पोस्ट में कहा कि 10 जून को बीकानेर हाउस को भेजे गए रेहान वाड़ा के ईमेल और उसी ईमेल में शामिल उनके प्रस्ताव में उन्होंने बताया था कि प्रदर्शनी में प्रकृति, वन्यजीव, कलाकृतियों और मूर्तियों से जुड़ी चीजें होंगी! इसमें कोई राजनीतिक सामग्री नहीं होगी! इस पर बीकानेर हाउस ने 30 जून को ईमेल का जवाब देते हुए उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। बीजेपी प्रवक्ता ने लोकसभा में विपक्ष के नेता



(स्फ़क्क) राहुल गांधी की इस पूरे मामले पर चुप्पी पर भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी, जो वियतनाम से हर छोटे-बड़े मुद्दे पर ट्वीट कर रहे हैं, उन्होंने अब तक रेहान वाड़ा के समर्थन में खुलकर एक भी ट्वीट नहीं किया है। उन्होंने आगे कहा कि प्रियंका वाड़ा की पूरी कोशिश एक विवाद खड़ा करके अपने बेटे को राजनीति में उतारने (सॉजट लॉन्च करने) की थी। उन्हें अब राहुल गांधी पर राजनीतिक भरोसा नहीं रहा है। यह विवाद तब शुरू हुआ जब रेहान ने ईस्टग्राम पर अपनी प्रदर्शनी,

जिसका शीर्षक नो आइडिया इज फाइनल था, से तस्वीरें हटाए जाने को लेकर चिंता जताई। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदर्शनी शुरू होने से कुछ समय पहले ही बीकानेर हाउस प्रशासन ने उन्हें कई तस्वीरें हटाने के लिए कहा था। रेहान के अनुसार, उन्होंने बुधवार (21 अक्टूबर) को दोपहर 3:30 बजे तक प्रदर्शनी से जुड़ी सारी जानकारी बीकानेर हाउस को सौंप दी थी। हालांकि, उनका दावा है कि आखिरी मौके पर 70 से ज्यादा तस्वीरें हटा दी गईं, जिससे प्रदर्शनी में केवल 40 के आसपास तस्वीरें ही बचीं।

हरियाणा के सीएम नायब सैनी ने राहुल गांधी पर साधा निशाना, कहा- असली मोहज़बत की दुकान चलाते हैं पीएम मोदी

नयी दिल्ली २४/१० (संवाददाता): हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने शनिवार को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर तीखा हमला बोला और उनकी पार्टी के नारे %मोहज़बत की दुकान% का मजाक उड़ाया। उन्होंने %ईंडिया% (डूहछट्ट) गठबंधन की प्रस्तावित मेगा रैली को लेकर उन पर निशाना साधा। भाजपा नेता ने सवाल उठाया कि 1984 के सिख-विरोधी दंगों और 1975 की इमरजेंसी के दौरान यह %नारा% (मोहज़बत की दुकान) कहाँ था? पत्रकारों से बात करते हुए, सैनी ने जोर देकर कहा कि राहुल गांधी को इन घटनाओं को स्वीकार करना चाहिए। मुख्यमंत्री सैनी ने कहा कि राहुल गांधी %मोहज़बत की दुकान% की बात करते हैं, लेकिन मैं उनसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ-जब 1984 के सिख-विरोधी दंगों से प्रभावित परिवार पीड़ित थे, तब यह %मोहज़बत की दुकान% कहाँ थी? इसे उनके लिए भी खोला जाना चाहिए था। जब 1975 में इंदिरा गांधी



ने इमरजेंसी लगाई थी, और लोग डर के साये में जीने को मजबूर थे, जेलों में बंद थे और अपने घर वापस नहीं जा पा रहे थे, तब यह दुकान कहाँ थी? उस समय इसे ज्यों नहीं खोला गया? राहुल गांधी को इतिहास के इन पन्नों को भी स्वीकार करना चाहिए। हरियाणा के मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा गरीबों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना, महिलाओं को एलपीजी सिलेंडर देना और जरूरतमंदों के लिए शौचालय बनवाना ही असल में %मोहज़बत की दुकान% है। सैनी ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गरीबों को 5 लाख रुपये तक की स्वास्थ्य सेवा का अधिकार

दिया है, जिससे वे सम्मान के साथ अपना इलाज करा सकते हैं और सिर उठाकर जी सकते हैं। उन्होंने उन माताओं को घर दिए हैं, जिनका सपना था कि उनके सिर पर अपनी छत हो। उन्होंने उन महिलाओं के आंसू पोछे हैं, जिन्हें खाना बनाने समय धुएं से परेशानी होती थी; उन्हें स्फ़क्क सिलेंडर देकर उन्होंने यह समस्या दूर की। उन्होंने उन महिलाओं के लिए शौचालय भी बनवाए, जिन्हें पहले सम्मान के साथ शौच जाने के लिए सूर्यास्त तक का इंतजार करना पड़ता था। मेरी नजर में, यही असली %मोहज़बत की दुकान है—एक ऐसी पहल जो देश को एकजुट करती है। राहुल गांधी

पर निशाना साधते हुए, सैनी ने तंज कसते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी ने देश में कई बार राहुल गांधी के राजनीतिक करियर को लॉन्च करने की कोशिश की है। एक रॉकेट का उदाहरण देते हुए, सैनी ने कहा कि राहुल गांधी का %लॉन्च% उनके राजनीतिक करियर की शुरुआत में ही फेल हो गया। सैनी ने कहा कि ऐसा सिर्फ एक बार नहीं हुआ है। उन्होंने कई बार उन्हें लॉन्च करने की कोशिश की है। कभी-कभी, जब आप कोई रॉकेट लॉन्च करते हैं, तो वह तुरंत ही फेल हो जाता है। कभी-कभी वह थोड़ी दूर तक जाता है और फिर जमीन पर गिर जाता है। इस मामले में, यह शुरुआत में ही फेल हो गया। उन्होंने बहुत धूमधाम से यह लॉन्च आयोजित किया, लेकिन अब इसमें कोई दम नहीं बचा है। कांग्रेस के पास उठाने के लिए अब कोई असली मुद्दा नहीं बचा है। सैनी की ये टिप्पणियां इंडिया गठबंधन की उस मेगा रैली से पहले आई हैं, जो 1 नवंबर को रामलीला मैदान में आयोजित होने वाली है।

नयी दिल्ली २४/१० (संवाददाता): सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के प्रमुख और उत्तर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री ओम प्रकाश राजभर ने 23 अक्टूबर को समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव को एक सीधी राजनीतिक चुनौती दी। उन्होंने कहा कि अगर अखिलेश यादव सच में मुस्लिम समुदाय की भलाई चाहते हैं, तो उन्हें 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों के लिए किसी मुस्लिम उम्मीदवार को अपनी पार्टी का मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित करना चाहिए। अंबेडकर नगर में बोलते हुए, राजभर ने उत्तर प्रदेश विधान परिषद चुनावों के दौरान समाजवादी पार्टी द्वारा लगाए गए %प्रशासनिक दबाव% के आरोपों को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि ये आरोप असल में हार के डर से बनाए गए बहाने हैं। उन्होंने अखिलेश यादव द्वारा हाल ही में जेल में वरिष्ठ सपा नेता आजम खान से



मुलाकात करने पर भी निशाना साधा। राजभर ने कहा कि अखिलेश यादव को आजम खान की याद तब आई जब चुनाव आ गए। इतने सालों तक उन्हें कभी आजम खान का खयाल नहीं आया। आज के समय में, मुसलमान राजनीतिक पार्टियों के लिए सिर्फ %दरी बिछाने% का काम करने को तैयार नहीं हैं; वे अब सीटें, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और समान अधिकारों की मांग कर रहे हैं।

राजभर ने कहा कि अगर अखिलेश यादव के मन में सच में मुसलमानों के लिए हमदर्दी है, तो उन्हें अभी यह घोषणा कर देनी चाहिए कि 2027 में अगर समाजवादी पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार बनती है, तो किसी मुसलमान को मुख्यमंत्री बनाया जाएगा। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव विनोद तावड़े द्वारा समाजवादी पार्टी की कोशिशों की हाल ही में की गई आलोचना का समर्थन करते हुए, राजभर ने याद दिलाया कि आजम खान चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य हैं। उन्होंने कहा कि विनोद तावड़े की बिल्कुल सही कह रहे हैं। जिस व्यक्ति को अदालत ने छह साल के लिए चुनाव लड़ने से रोक दिया है, वह चुनाव कैसे लड़ सकता है—तो फिर वे उसे गृह मंत्री

अरुणाचल प्रदेश में सियांग महा-परियोजना के खिलाफ उग्र विरोध, पुलिस-प्रदर्शनकारी झड़प में 4 महिलाएं घायल, सीएम खांडू ने की शांति की अपील

नयी दिल्ली २४/१० (संवाददाता): अरुणाचल प्रदेश में प्रस्तावित %सियांग अपर मल्टीपर्पज प्रोजेक्ट को लेकर तनाव काफी बढ़ गया है। 23 अक्टूबर को परियोजना का विरोध कर रहे प्रदर्शनकारियों और पुलिस बलों के बीच हुई हिंसक झड़प में कम से कम चार महिलाएं घायल हो गईं। स्थिति को बेकाबू होते देख भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े। यह घटना सियांग, अपर सियांग और ईस्ट सियांग जिलों के विभिन्न हिस्सों में बुलाए गए 12 घंटे के बंद के दौरान घटी। प्रभावित इलाकों में व्यावसायिक प्रतिष्ठान और दुकानें पूरी तरह बंद रहीं, जिससे सामान्य जनजीवन बुरी तरह

प्रभावित हुआ। यह टकराव सियांग जिले के गेकू के पास डाइट-डाइम में हुआ, जहां बंद के समर्थन में लगभग 150-200 प्रदर्शनकारी इकट्ठा हुए थे। पुलिस के अनुसार, प्रदर्शनकारियों ने बैरिकेड्स तोड़ने की कोशिश की, सुरक्षाकर्मियों पर पथराव किया और पुलिस वाहनों को नुकसान पहुंचाया। सियांग के पुलिस अधीक्षक (स्क) कामदाम सिखोम ने बताया कि अपर सियांग जिले के गेकू और कोमकार इलाकों से आए प्रदर्शनकारी सुबह करीब 7 बजे घटनास्थल पर जमा हुए थे। उन्होंने कहा कि भीड़ ने बैरिकेड्स को तोड़ने की कोशिश की और निषेधाज्ञा का उल्लंघन किया, जिसके बाद एक

कार्यकारी मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में पुलिस को कार्रवाई करनी पड़ी। एक अन्य पुलिस अधिकारी ने पुष्टि की कि चार महिलाएं घायल हुई हैं और उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हालांकि, प्रदर्शनकारियों का दावा है कि कई लोगों को आंसू गैस के गोले लगे, जिससे उन्हें सांस लेने में दिक्कत हुई। इस बंद के कारण प्रभावित इलाकों में जनजीवन अस्त-व्यस्त रहा; दुकानें और व्यावसायिक प्रतिष्ठान बंद रहे और लोग ज़्यादातर अपने घरों के अंदर ही रहे। अधिकारियों ने बताया कि सियांग और अपर सियांग जिलों के बाकी हिस्सों में बंद शांतिपूर्ण रहा। यह बंद संयुक्त रूप से आदि बाने के बांग



यूनाइटेड, SUMP अफेक्टेड एरिया यूथ एसोसिएशन, सियांग इंडिजिनस फार्मर्स फोरम यूथ विंग% और %आदि गैलो वेलफेयर सोसाइटी% द्वारा बुलाया गया था। इस संगठनों ने गिरज़्ता कार्यकर्ताओं की रिहाई, निर्लंबित गांव बुरा (गांव के मुखिया) को बहाल करने, परियोजना के लिए चल रही शुरुआती गतिविधियों को रोकने और इलाके में तैनात

अर्धसैनिक बलों व केंद्रीय सुरक्षा बलों को हटाने की मांग की है। जिन कार्यकर्ताओं की रिहाई की मांग की गई है, उनकी संख्या के बारे में अलग-अलग जानकारी मिल रही है। विरोध प्रदर्शन के आयोजकों ने स्थानीय समुदायों, जमीन, आजीविका और पर्यावरण पर इस परियोजना के पड़ने वाले असर को लेकर भी चिंता जताई है। मुख्यमंत्री

पेमा खांडू ने लोगों से परियोजना के मूल्यांकन में सहयोग करने की अपील की। कृष्ट विरोध प्रदर्शनों के बीच, अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने निवासियों से आग्रह किया कि वे नेशनल हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कॉरपोरेशन (ह।क्व्ष्ट) द्वारा परियोजना की %प्रै-फिजिबिलिटी रिपोर्ट% (क्वक्कत्र) तैयार करने के काम में सहयोग करें। खांडू ने सियांग क्षेत्र के लोगों से अपील की कि वे हिंसा का सहारा लेने के बजाय राज्य सरकार और उसके नेतृत्व से जानकारी मांगें। सरकार ने इस परियोजना को एक रणनीतिक पहल बताया है, जिसका उद्देश्य सियांग बेसिन में पानी के बहाव को नियंत्रित करने में मदद करना है। सरकार ने इस परियोजना के रणनीतिक

महत्व को त्ज़्बत में यारलुंग त्सांगपो नदी पर चीन की प्रस्तावित मेगा जलविद्युत परियोजना से भी जोड़ा है। प्रस्तावित परियोजना की क्षमता लगभग 11,200 मेगावाट होने की बात कही गई है, हालांकि कुछ रिपोर्टों में यह आंकड़ा 11,500 मेगावाट बताया गया है। पूर्व सांसद ताकम संजॉय के नेतृत्व वाली अरुणाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने इस प्रस्तावित परियोजना का विरोध किया है और %प्रै-फिजिबिलिटी रिपोर्ट% के लिए किए जा रहे फील्ड सर्वेक्षणों को अस्थायी रूप से रोकने की मांग की है। पार्टी ने प्रभावित क्षेत्रों से सुरक्षा बलों को हटाने, हिरासत में लिए गए आदि समुदाय के सामाजिक कार्यकर्ताओं को रिहा करने,

प्रदर्शनकारियों के खिलाफ दर्ज ख़ट्टक़ावपस लेने, और परियोजना का विरोध करने वाले ग्राम प्रमुखों तथा सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ की गई दंडात्मक कार्रवाई को रद्द करने की मांग की है। कांग्रेस ने 350 करोड़ रुपये के प्रस्तावित विशेष विकास पैकेज पर भी सवाल उठाए हैं। पार्टी का तर्क है कि विकास कार्यों का उद्देश्य प्रभावित समुदायों का भरोसा जीतना होना चाहिए, न कि परियोजना के लिए उनकी सहमति हासिल करना। चीन की जलविद्युत योजनाओं को लेकर जताई गई चिंताओं को स्वीकार करते हुए भी, पार्टी का कहना है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर स्थानीय लोगों से परामर्श करने और उनके अधिकारों की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए।



विविध समाचार



फेफड़ों की बीमारी के लिए चुकंदर का रस फायदेमंद!

एक शोध से यह बात सामने आई है कि 12 सप्ताह तक चुकंदर का रस लेने से क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) से पीड़ित लोगों में सुधार हुआ है। सीओपीडी एक गंभीर फेफड़ों की स्थिति है जो दुनिया भर में लगभग 400 मिलियन लोगों को प्रभावित करती है, जिसमें क्रॉनिक ब्रॉन्काइटिस और वातस्फीति (एम्फाइजिमा) शामिल है, जिससे सांस लेने में कठिनाई होती है और लोगों की शारीरिक गतिविधि की क्षमता गंभीर रूप से सीमित हो जाती है। इससे दिल के दौरे और स्ट्रोक का खतरा भी बढ़ जाता है। रोपियन रेस्पिरेटरी जर्नल में प्रकाशित नए शोध में एक केंद्रित चुकंदर के रस के पूरक का परीक्षण किया गया, जिसमें चुकंदर के रस के मुकाबले नाइट्रेट की मात्रा अधिक होती है, जो दिखने और स्वाद में समान था। लेकिन, नाइट्रेट हटा दिया गया था।

इपीरियल कॉलेज लंदन यूके के प्रोफेसर निकोलस हॉपकिंसन ने कहा, कुछ सबूत हैं कि नाइट्रेट के स्रोत के रूप में चुकंदर के रस का उपयोग एथलीटों द्वारा अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए किया जा सकता है और साथ ही रक्तचाप को देखते हुए कुछ अल्पकालिक अध्ययन भी किए गए हैं। हॉपकिंसन ने कहा, रक्त में नाइट्रेट का उच्च स्तर नाइट्रिक ऑक्साइड की उपलब्धता को बढ़ा सकता है, एक रसायन जो रक्त वाहिकाओं को आराम देने में मदद करता है। यह मांसपेशियों की कार्यक्षमता को भी बढ़ाता है यानी समान कार्य करने के लिए उन्हें कम ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है। अध्ययन में सीओपीडी वाले 81 लोगों को शामिल किया गया और जिनका सिस्टोलिक रक्तचाप 130 मिलीमीटर पारा (एमएमएचजी) से अधिक था। मरीजों के रक्तचाप की निगरानी करने के साथ-साथ, शोधकर्ताओं ने परीक्षण किया कि अध्ययन की शुरुआत और अंत में मरीज छह मिनट में कितनी दूर तक चल सकते हैं। प्रतिभागियों को 12 महीने के कोर्स में नाइट्रेट से भरपूर चुकंदर का रस दिया गया और कई सैगियों को बिना नाइट्रेट वाला चुकंदर का रस दिया गया।

शोधकर्ताओं ने पाया कि नाइट्रेट युक्त पूरक लेने वाले ने नाइट्रेट लेने वाले की तुलना में सिस्टोलिक रक्तचाप में 4.5 मिमी/एचजी की औसत कमी का अनुभव किया। नाइट्रेट से भरपूर चुकंदर का जूस पीने वाले मरीज छह मिनट में कितनी दूर तक चल सकते हैं, इसमें भी औसतन लगभग 30 मीटर की वृद्धि हुई। प्रोफेसर हॉपकिंसन ने कहा, अध्ययन के अंत में हमने पाया कि नाइट्रेट युक्त चुकंदर का जूस पीने वाले लोगों का रक्तचाप कम था और उनकी रक्त वाहिकाएं कम कठोर हो गईं। जूस से यह बात भी सामने आई कि सीओपीडी वाले लोग छह मिनट में कितनी दूर तक चल सकते हैं। यह इस क्षेत्र में अब तक के सबसे लंबी अवधि के अध्ययनों में से एक है। परिणाम बहुत आशाजनक हैं, लेकिन इसके लिए दीर्घकालिक अध्ययनों की आवश्यकता होगी।

स्वीडन में कारोлинस्का इंस्टिट्यूट के प्रोफेसर अयोस्टोलास बोसियोस ने कहा, सीओपीडी को ठीक नहीं किया जा सकता है, इसलिए मरीजों को इस स्थिति के साथ बेहतर जीवन जीने और उनके हृदय रोग के खतरे को कम करने में मदद करने की सख्त जरूरत है। हालांकि, बोसियोस ने निष्कर्षों की पुष्टि के लिए लंबी अवधि तक रोगियों का अध्ययन करने की आवश्यकता पर बल दिया।



दिल के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है अजवाइन

अगर आप वजन कम करना चाहते हैं या कब्ज की समस्या से परेशान हैं, तो आपके लिए अजवाइन का सेवन फायदेमंद है। इसमें कई ऐसे गुण होते हैं, जो आपकी कई शारीरिक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। वया आप काफी समय से वजन कम करने की कोशिश में लगे हुए हैं और नहीं कर पा रहे हैं या पेट की समस्या से परेशान हैं, तो ऐसी कई समस्याओं का उपाय, आपके क्विन में रखा यह एक मसाला कर सकता है। हम बात कर रहे हैं अजवाइन की, यह एक सबसे सरसता और फायदेमंद मसाला होने के साथ एक अच्छा फैट बर्नर भी है।

अजवाइन का इस्तेमाल भारतीय रसोई में काफी सालों से किया जा रहा है। इसके सेवन से आप आसानी से वजन कर सकते हैं। यह कई स्वास्थ्य संबंधित फायदे भी देती है, जैसे कि पेट दर्द, गैस और पेट के कई रोगों को भी यह दूर करने में मदद करती है। जिन लोगों को गठिया है, उसके उपचार में भी यह काफी लाभदायक साबित हो सकता है। इसका उपयोग हर्बल औषधि में किया जाता है।

वेट लॉस में मदद करता है

अजवाइन में थाइमोल नामक एक तत्व होता है, जो आपके मेटाबोलिज्म को बूस्ट करता है। जब आपका मेटाबोलिज्म बूस्ट होता है, तो नया फैट बन नहीं पता है और पुराना फैट आसानी से बर्न होता है, तो अजवाइन का सेवन इस तरह से वजन कम करने में मदद कर सकता है।

गला खराब होना एक आम समस्या है, खासकर मौसम बदलने पर या ठंडी-गर्म चीजें खाने से। बार-बार गले में खराब, दर्द, खिंचाव या जलन होना हमारी प्रतिरोधक क्षमता के कमजोर होने और गले की नमी कम होने का संकेत है। आयुर्वेद में इसके कई सरल और असरदार उपाय बताए गए हैं, जिन्हें अपनाकर आप तुरंत आराम पा सकते हैं।

गला खराब होने के कारण

- बार-बार ठंडी चीजें खाना
- ज्यादा मसालेदार और तैलीय भोजन
- धूल, प्रदूषण और धुआं
- अधिक बोलना या जोर से चिल्लाना
- पाचन तंत्र की कमजोरी

आयुर्वेदिक उपाय जो देंगे तुरंत राहत

- गर्म पानी और नमक से गरारे
- आयुर्वेद के अनुसार, गले की खराब और सूजन कम करने के लिए नमक मिले गुनगुने पानी से गरारे करना सबसे आसान और असरदार उपाय है।

दिल के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है अजवाइन में फाइबर, विटामिन ए और अन्य तरह के पोषण पाए जाते हैं, जो दिल के स्वास्थ्य को सुधार सकती हैं। इस पर हुए शोध में पता चला है कि इसमें एंटीऑक्सीडेंट की भरपूर मात्रा पाई जाती है, जो शरीर में कोलेस्ट्रॉल से लड़ने में काफी सहायक होती है।

दर्द निवारक है

पेट के दर्द में अजवाइन काफी काम आती है, क्योंकि इसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं, जो दर्द को कम करने में मदद करते हैं। दर्द के अलावा यह सूजन को भी कर सकती है। अजवाइन में थाइमोल नामक तत्व होता है, जो एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-ऑक्सीडेंट गुणों के लिए जाना जाता है।

ब्लड प्रेशर कंट्रोल

इसमें मौजूद पोटेशियम और एंटीऑक्सीडेंट्स की मात्रा ब्लड प्रेशर को कंट्रोल में मदद कर सकता है। हाई पोटेशियम डाइट से उच्च ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

पाचन स्वास्थ्य के लिए

अजवाइन पाचन को सुधारने में मदद कर सकता है। अगर आपको गैस, एसिडिटी, और कब्ज की समस्या बनी रहती है, तो अजवाइन इसका रोजाना सेवन जरूरी करना चाहिए।

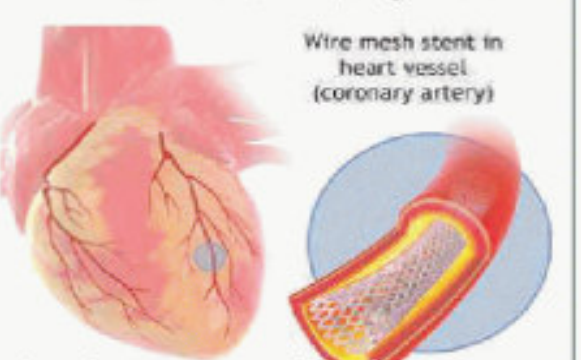


महिलाओं में होने वाले सबसे गंभीर कैंसरों में से एक है सर्वाइकल कैंसर

कैंसर एक बहुत ही खतरनाक बीमारी है। यह कई प्रकार के होते हैं। इन्हीं में से एक है सर्वाइकल कैंसर। यह महिलाओं में होने वाले सबसे गंभीर कैंसरों में से एक है। ब्रेस्ट कैंसर के बाद भारत में इस बीमारी से सबसे ज्यादा महिलाएं पीड़ित हैं। यह महिलाओं की मौत का एक प्रमुख कारण माना जाता है। इस गंभीर बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाने के मकसद से हर साल जनवरी के महीने को सर्वाइकल कैंसर अवेयरनेस मंथ के तौर पर मनाया जाता है। सर्वाइकल कैंसर गर्भाशय ग्रीवा में होता है। इसे गर्भाशय के मुँह का भी कैंसर कहा जाता है। महिलाओं में गर्भाशय और योनि को जोड़ने वाले हिस्से को सर्विक्स कहते हैं। इस वजह से इसमें होने वाले कैंसर को सर्वाइकल कैंसर कहा जाता है। यह कैंसर एचपीवी यानी कि ह्यूमन पैपिलोमा वायरस के कारण होता है। एचपीवी शरीर में अंदर प्रवेश करके यूटेरस के अंदरूनी हिस्से को नुकसान पहुंचाता है और वीरे-वीरे कैंसर का रूप ले लेता है। दरअसल इसके लक्षण काफी आम होते हैं जिसकी वजह से अक्सर महिलाएं से नजरअंदाज कर देती हैं। एक्सपोर्ट के मुताबिक 30 की उम्र की महिलाओं को सर्वाइकल कैंसर खतरा ज्यादा रहता है। सर्वाइकल कैंसर होने के पीछे कई कारण जिम्मेदार होते हैं, जिसमें से है एक से अधिक सर्वाइ के साथ संबंध बनाना, खराब हाइजीन, बर्ष कंट्रोल पिल्स का इस्तेमाल करना, स्मैकिंग और परिवार का इतिहास इस कैंसर के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।

सर्वाइकल कैंसर के बारे में ऐसे चलता है पता

सर्वाइकल कैंसर के लक्षण वैसे दिखाई नहीं देते हैं, लेकिन फिर भी आपको शक है तो इसीलिए इसकी स्क्रीनिंग टेस्ट होती है। पैप स्मीयर टेस्ट सबसे महत्वपूर्ण टेस्ट होता है। इसमें गर्भाशय ग्रीवा के ऊतकों का नमूना लिया जाता है। अगर इसमें असामान्य कोशिकाएं मिलती हैं तो एचपीवी टेस्ट की जाती है। इन जांचों से सर्वाइकल कैंसर का पता लगता है। इसके बाद इलाज शुरू किया जाता है।



कितने साल चलता है हार्ट का कोरोनरी स्टेंट

कोरोनरी स्टेंट एक तकनीकी उपाय है जिसका उपयोग धमनियों (कोरोनरी आर्टरीज) को खोलने के लिए किया जाता है ताकि रक्त स्वतंत्रता से हृदय में पहुंच सकें। इसका उपयोग हृदय संबंधित समस्याओं, जैसे कि दिल का दौरा, कोरोनरी आर्टरी रोग, या अन्य धमनिक बीमारियों के इलाज में किया जाता है। कोरोनरी स्टेंट जिस तकनीकी साधन का उपयोग किया जाता है, वह साधन धातु से बना होता है और धातु की दरबारी विशेषता और रक्त की प्रवाह की गति के आधार पर इसकी जीवनकाल की अधिकतम विशेषता को निर्धारित करती है। कई प्रकार के स्टेंट्स उपलब्ध हैं, जिनमें शास्त्रीय (बेयर-मेटलिक) और ड्रग-एलूटिंग स्टेंट्स शामिल हैं। शास्त्रीय स्टेंट्स का जीवनकाल आमतौर पर कुछ साल से लेकर कई दशक तक हो सकता है, जबकि ड्रग-एलूटिंग स्टेंट्स में शास्त्रीय स्टेंट्स के मुकाबले ड्रगों का उपयोग किया जाता है जो आराम से विघटित होते हैं और उनका प्रभाव अधिक समय तक बना रहता है। यह निर्भर करता है कि रोगी का स्वास्थ्य, सामान्य शारीरिक स्थिति, और स्थानांतरण का उपयोग किस तकनीकी साधन पर किया गया है। आपके चिकित्सक से यह सवाल करना हमेशा उचित होता है।

इन उपायों से पाएं टॉन्सिल इन्फेक्शन से छुटकारा

सर्द मौसम का सबसे ज्यादा असर हमारी हेल्थ पर पड़ता है। अक्सर गले में दर्द सर्दी-जुकाम के कारण होता है जो कुछ दिनों में ठीक हो जाता है। अगर गले का दर्द एक हफ्ते से ज्यादा रहे तो आपको टॉन्सिल में इन्फेक्शन की परेशानी हो सकती है।

टॉन्सिल में इन्फेक्शन होने पर गले में दर्द रहता है और टॉन्सिल सूज जाते हैं। टॉन्सिल में सूजन होने से ना सिर्फ खाने-पीने में दिक्कत होती है बल्कि खलाइवा तक निगलने में दिक्कत होने लगती है। टॉन्सिल में इन्फेक्शन होने से गले में दर्द और खराब, दुखार, आवाज में खराबी, गले में जकड़न जैसी समस्याएं बेहद परेशान करती हैं। अब भी गले में इस तरह की परेशानी महसूस कर रहे हैं तो उसका घर में ही उपचार करें।

नीबू से करें उपचार

टॉन्सिल का उपचार करने के लिए नीबू बहुत ही

अच्छा घरेलू नुस्खा है। एक गिलास गर्म पानी में नीबू डालें और उसमें शहद और नमक मिलाकर उसका सेवन करें। गर्म पानी के साथ नीबू का सेवन दिन में दो से तीन बार करें आपको गले के दर्द से निजात मिलेगी।

गाजर का जूस दर्द से दिलाएगा राहत

गाजर विटामिन ए का बेहतरीन स्रोत है जो एंटी टॉन्सिल गुणों से भरपूर है। गाजर का जूस विषैले तत्वों और टॉन्सिलिटिस को कम करता है। कुछ लोगों को कब्ज की शिकायत रहती है जिसकी वजह से भी टॉन्सिलिटिस होता है ऐसे लोग गाजर के जूस का सेवन करें तुरंत राहत मिलेगी।

अंजीर के पेस्ट से करें उपचार

अंजीर को पानी में उबाल कर इसका पेस्ट बना लें। अब इस पेस्ट को गले पर लगाएं। इससे आपको टॉन्सिलिटिस से होने वाले दर्द से आराम मिलेगा।



कलिंग समाचार



संपादकीय

दलित क्या पानी पीने के हकदार नहीं

देश में धार्मिक और जातीय भेदभाव के कारण समाज में जो दुश्मनी का माहौल बन गया हैए अब उसमें इसी तरह इंतिकाम यानी बदला लेने की घटनाएं हो रही हैं। तमिलनाडु के पुडुकोट्टई जिले के वेंगईवयाल गांव में एक झकझोरने वाला मामला सामने आया है। इस गांव के बच्चे पिछले कुछ दिनों से बीमार पड़ रहे थे। डाक्टर ने बीमारी का पता लगाने के लिए पानी की जांच करने कहा। गांव में जिस पानी की टंकी से आपूर्ति होती थीए उस पर चढ़कर देखा गया तो पानी पीला नजर आया। जांच के बाद पता चला कि लगभग 10 हजार लीटर वाली इस पानी टंकी में किसी ने बड़ी मात्रा में मानव मल डाल दियाए ताकि पानी दूषित हो जाए। यह अमानवीय कृत्य केवल इसलिए हुआए क्योंकि वेंगईवयाल गांव आज भी दलित विरोधी मानसिकता से जकड़ा हुआ है। एक और चिंताजनक और हैरान करने वाली बात ये है कि यह खबर देते हुए कुछ लोगों ने अनुसूचित या दलित समुदाय के लिए बनी पानी टंकी लिखा है। हमने प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुआं तो पढ़ी हैए लेकिन आजादी के अमृतकाल में भी अगर दलितों की पानी टंकी पढ़ना पड़ेए तो ये समझना कठिन नहीं है कि आजादी का अमृत केवल सवर्ण.संपन्न तबकों के लिए ही है। गरीब पहले गुलाम थेए अब भी उनके हालात गुलामों की तरह ही बदतर हैं। जिस गांव में दलितों के पानी पीने पर भी साजिश रची गईए वहां इस बात का भी खुलासा हुआ है कि यहां जातिगत भेदभाव हर जगह है। गांव में चाय की दुकान पर दलितों के लिए अलग गिलास रखे हुए हैं। दलितों का ये भी कहना है कि उन्हें तीन पीढ़ियों से मंदिर के भीतर प्रवेश की अनुमति नहीं है। पानी टंकी को मानव मल से दूषित करने की शिकायत के बाद जब यहां की जिलाधिकारी कविता रामू और पुलिस अधीक्षक वंदिता पांडे गांव में पहुंचीं तब लोगों ने इन सारे भेदभाव की शिकायत की। बताया जा रहा है कि जिस चाय दुकान में दलितों के लिए अलग गिलास रखने का रिवाज थाए उसके मालिक के खिलाफ शिकायत दर्ज की गई है। दलितों को मंदिर में प्रवेश दिलवाने की पहल भी जिलाधिकारी ने की। उन्होंने कहा कि मंदिर के दरवाजे सभी के लिए खुले होने चाहिए और सभी को यहां दर्शन की अनुमति दी जानी चाहिए। भविष्य में ऐसी घटना ना हो इसके लिए यहां कैमरे लगाए जाएं। जिलाधिकारी दलित समुदाय के लोगों को मंदिर के अंदर ले गईं। लेकिन खबरों के मुताबिक जिस समय जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक वहां पहुंचीं तो वहां पर पूजा चल रही थीए उसी दौरान कथित रूप से ऊंची जाति की एक महिला ने अपने शरीर में देवता के आने की बात कही और कहा कि नीची जाति के लोगों को मंदिर में प्रवेश नहीं करना चाहिए। अगर यह बात सही है तो फिर यह समझ लेना चाहिए कि जिलाधिकारी की इस स्वागतयोग्य पहल का कोई भविष्य नहीं है। दरअसल जाति की बेड़ियों ने समाज को इस तरह बांधा हुआ है कि उसे टूटने में सदियां लग जाएंगी। वैसे यह विचारणीय है कि वेंगईवयाल गांव में अगर पानी टंकी का दुखद प्रकरण घटित नहीं होताए तो क्या पुडुकोट्टई जिला प्रशासन को दलितों के साथ हो रहे भेदभाव की खबर लग पाती। अगर तीन पीढ़ियों से दलितों को मंदिर प्रवेश नहीं मिला थाए तो यह बात पहले से प्रशासन के संज्ञान में क्यों नहीं थी। जो भेदभाव जिले के एक गांव में हुआ हैए क्या अन्य गांवों.शहरों का भी वही हाल नहीं होगा। दुखद बात ये है कि दलितों के साथ ये अन्याय उस तमिलनाडु में हुआए जो ई वी रामास्वामी पेरियार की जन्मभूमि और कर्मभूमि दोनों रहीं। पेरियार ने पूरी जिंदगी अंधविश्वासए अतार्किकताए रूढ़िवादी विचारों और ब्राह्मणवाद की मुखालफ्त की। उन्हें हिंदू धर्म के खिलाफबताया जाता हैए लेकिन असल में वे सभी संगठित धर्मों के खिलाफथे। पेरियार हर तरह के भेदभाव के खिलाफथेए चाहे वह जाति या धर्म को लेकर हो या फिर लैंगिक आधार पर। इसलिए उन्होंने बाल विवाह के उन्मूलनए विधवा महिलाओं की दोबारा शादी के अधिकारए पार्टनर चुनने या छोड़नेए शादी को इसमें निहित पवित्रता की जगह पार्टनरशिप के रूप में लेनेए आदि के लिए अभियान चलाया था।

भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए नौसेना के विस्तार की आवश्यकता

नन्तु बनर्जी

भारतीय नौसेना की वर्तमान बेड़े की ताकत उत्तर कोरियाए कोलंबियाए मिस्रए थाईलैंड और ईरान की तुलना में भी कम है। 2020 तकए भारतीय नौसेना की वास्तविक बेड़े की ताकत की तुलना में पीएलएएन के बेड़े का आकार ;विमान वाहक और पनडुब्बियों सहित 777 युद्धपोतद्ध काफी बड़ा था। अमेरिकी रक्षा विभाग की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पीएलएएन के कुल बेड़े का आकार १85 गश्ती लड़ाकों और शिल्प को शामिल नहीं करता है जो एंटी.शिप करूज मिसाइल ;एएससीएमद्ध ले जाते हैं ए

भारतीय नौसेना को मजबूत करने के लिए भारत को आने वाले वर्षों में तेजी से पूंजीगत बजट को बढ़ाना होगाए अपने बेड़े को विस्तारित करना होगाए और आधुनिकीकरण की गति तेज करनी होगी ताकि आकार में दुनिया की सबसे बड़ी नौसेना शक्तिए चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी नेवी ;पीएलएएनद्ध से हिंद महासागर तथा प्रशांत क्षेत्र में बढ़ते खतरों का मुकाबला किया जा सके। सरकार को इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए कि पीएलएएन भारतीय नौसेना से चार गुना बड़ा और मजबूत है। यह सच है कि इस वित्तीय वर्ष में पहली बार भारतीय नौसेना का पूंजीगत व्यय लक्ष्य 45 प्रतिशत तक बढ़ाया गया हैए परन्तु आगे भी इसे बढ़ाने की आवश्यकता है।

पिछले साल के 21000 करोड़ की तुलना में 2022.23 के लिए अकेले जहाजों और उपकरणों के लिए बजट आबंटन 35ए452 करोड़ रुपये था। कुल पूंजी परिव्यय का 75 प्रतिशत इसके बेड़े के लिए निर्धारित किया गया हैए जिसमें युद्धपोतए पनडुब्बी और अन्य उपकरण शामिल हैं। देश के नौसैनिक बल को 2023.24 और उसके बाद भी इसी तरह के बजट की जरूरत है। भारतीय नौसेना को इस क्षेत्र में बढ़ते पीएलएएन के खतरे का सामना करने के लिए अपनी क्षमता को मजबूती से बढ़ाने की आवश्यकता हैए विशेष रूप से भारत के तीन महासागर साझा करने वाले पड़ोसियों– बांग्लादेशए श्रीलंका और पाकिस्तान के साथ उसके बढ़ते सैन्य गठबंधन के संदर्भ में।

दुर्भाग्य सेए भारतीय नौसेना को वह प्राथमिकता नहीं मिलीए जिसकी वह पहले के वर्षों में सरकार से हकदार थी। भारतीय नौसेना की वर्तमान बेड़े की ताकत उत्तर कोरियाए कोलंबियाए मिस्रए थाईलैंड और ईरान की तुलना में भी कम है।

2020 तकए भारतीय

नौसेना की वास्तविक बेड़े की ताकत की तुलना में पीएलएएन के बेड़े का आकार ;विमान वाहक और पनडुब्बियों सहित 777 युद्धपोतद्ध काफी बड़ा था। अमेरिकी रक्षा विभाग की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पीएलएएन के कुल बेड़े का आकार 85 गश्ती लड़ाकों और शिल्प को शामिल नहीं करता है जो एंटी.शिप करूज मिसाइल ;एएससीएमद्ध ले जाते हैं ए

सिलसिला चल पड़ा है और अब मध्यप्रदेश के एक और भारतीय जनता पार्टी के विधायक रामेश्वर शर्मा ने भी यही घोषणा बुलंद कर दी है। प्रज्ञा ठाकुर तो पहले भी अपने बयानों से प्रधानमंत्री मोदी को दुखी कर चुकी हैं। प्रज्ञा पहले महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को देशभक्त बता चुकी हैं। तब प्रधानमंत्री ने कहा था कि श्भले ही नाथूराम गोडसे को देशभक्त बताने की बात पर प्रज्ञा माफ़ी मांग चुकी हो लेकिन मैं उन्हें कभी हृदय से क्षमा नहीं कर पाऊंगा ए़ अब प्रज्ञा हैं कि दुख बढ़ाती ही चली जा रही हैं। मुंबई बम विस्फोट में शहीद महाराष्ट्र के एटीएस चीफहेमंत करकरे के लिए प्रज्ञा कहती हैं. श्वे अपने शाप की वजह से मरे ए़ करकरे चाहते तो मुंबई

आने वाले वित्तीय वर्षों में भारतीय नौसेना के लिए एक ब पर बजट आबंटन मौजूदा जहाजों और पनडुब्बियों को आधुनिक बनाने में मदद करेगा और इसके बेड़े के आकार को भी बढ़ायेगा क्योंकि चीन अपनी नौसैनिक पहुंच को और बढ़ा देगा। अमेरिकाए जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसी अत्याधुनिक नौसैनिक शक्तियों के साथ भारत की बढ़ती भागीदारी– चतुर्भुज सुरक्षा संवाद ;क्राडद्ध के सभी सदस्य.बहुत कम मूल्य की होगी यदि भारतीय नौसेना स्वयं पर्याप्त मजबूत नहीं है। हालांकि अमेरिकी बेड़े का आकार ;490 जहाजद्ध चीन की तुलना में छोटा हैए यह घातक शक्ति में पीएलएएन की तुलना में काफी मजबूत है। वास्तव मेंए अमेरिकी नौसेनाए मारक क्षमता के मामले मेंए विमान वाहक और पनडुब्बियों की बेजोड़ ताकत के साथ सबसे आधुनिक और बहुमुखी मानी जाती है।

वर्ल्ड डायरेक्टरी ऑफ़ मॉडर्न वारशिप्स 2023 अमेरिकी नौसेना को दुनिया की सबसे मजबूत नौसैनिक शक्ति मानती हैए इसके बाद पीएलएएन, रूसी नौसेना, इंडोनेशियाई नौसेना, कोरिया गणराज्य की नौसेना, जापान समुद्री आत्मरक्षा बल और भारतीय नौसेना का स्थान है। अमेरिकी नौसेना के पास 11 विमान वाहकए 10 हेलीकॉप्टर वाहकए 68 पनडुब्बी और 92 विध्वंसक हैं। केवल पीएलएएन के पास अधिक पनडुब्बियां ;79द्ध हैं।

तू नया है तो दिखा सुबह नई शाम नई

पर आतंकी हमले के वक्त नीचे आर्डर पास कर सकते थे लेकिन उन्होंने मोर्चा खुद संभाला।
अपेक्षाकृत कमजोर बुलेटफफ़ हेलमेट जो उनका नहीं था और रायफल के साथ मैदान में कूद पड़े। सीने पर गोलियां खाईं। ये तथ्य उस समय की तमाम मीडिया रिपोर्ट्स में हैं। वही हेमंत करकरे मालेगांव बम विस्फोट कांड की भी जांच कर रहे थे जिसमें प्रज्ञा सिंह ठाकुर एक आरोपी थीं। सवाल यही है कि पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का मुखर विरोध करने वाली पार्टी यहां जान की बाज़ी लगा देने वालों के लिए पूर्वाग्रही कैसे हो जाती हैय और फिर यह कैसा दर्द है जो उन्हीं प्रज्ञा को 2019 में भोपाल से लोकसभा का टिकट दिलवा देता हैए उन्हें सांसद बना देता है। आप कहेंगे कि सांसद तो जनता ने बनाया। उसने जिताय़ाए बेशक जनता जो वोट देती हैए जि मेदार है। यहां इस क्रोनोलॉजी पर भी निगाह डालने की ज़रूरत है कि गुजरात में जो बिलकिस बानो दंगों के दौरान बलात्कार और परिजनों की हत्या का शिकार होती हैं उसके सजाया ता अपराधी रिहा कर दिए जाते हैं और जो सांसद कहती हैं कि श्अपनी बेटियों को सुरक्षित रखोए अपनी बेटियों को संस्कारित करोए अपने घर में हथियार रखोए कुछ नहीं तो सब्जी काटने वाला चाकू ज़रा तेज रखो! स्पष्ट बोल रही हूं कि हमारे घरों में भी सब्जी काटने के लिए जो चाकू है उसे तेज़ रखो। जो सब्जी अच्छे से कटेगी तो दुश्मनों के सर भी अच्छे से कटेंगे। उन्होंने हमारे कार्यकर्ताओं

रूस में 64 पनडुब्बियां 300 विमान हैं। आठ लैंडिंग शिप टैंकए एक उभयचर परिवहन डॉकए दो विमान वाहकए विभिन्न छोटी पेट्रोल नौकाएं पूरक जहाज भी हैं। भारतीय नौसेना के पास लगभग 75000 रिजर्व और 67000 से अधिक सक्रिय कर्मी हैं। इसके पास अंडमान और निकोबार द्वीप समूहए पश्चिम बंगालए आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, ओडिशा, केरल, लक्षद्वीप, महाराष्ट्रए गोवाए कर्नाटक और गुजरात में पूरी तरह से सुसज्जित और प्रशिक्षण आधार हैं।

इन आधारों से गोला.बारूद समर्थनए रसद और रखरखाव सहायताए समुद्री कमांडो आधारए वायु स्टेशनए आगे संचालन आधारए पनडुब्बी और मिसाइल नाव आधारए मिसाइल रक्षा और तटीय रक्षा प्रदान करने वाले हैं। भारत की नौसेना जल्द ही एक मजबूत वैश्विक नौसैनिक शक्ति बनने की आकांक्षा रखती है।

नेशनल इन्स्ट्रेस्ट डॉट ऑर्ग पर सैन्य विश्लेषकों की 2021 की एक रिपोर्ट में 2030 में दुनिया की पांच शीर्ष नौसेनाओं का अनुमान लगाया गया है। दिलचस्प बात यह है कि इसने भारतीय नौसेना को रूस से आगे चौथे स्थान पर रखा। यह रिपोर्ट अगले आठ वर्षों में भारतीय नौसेना के विस्तार के बारे में अति.आशावादी है। अमेरिकी नौसेना नंबर 1 हैए उसके बाद ब्रिटिश नौसेना और चीनी नौसेना है। विश्लेषकों को उ मीद है कि टन भार और तकनीकी प्रगति के बेजोड़

अभिभावक भी यहां पहुंचकर उनके पंख कतरना चाहते हैं।

सूमरीतलैयाए बिहार की निरुपमा के साथ भी यही हुआ। पुलिस ने परिजनों को गिर तार करते हुए आरोप लगाया कि उसने खुदकुशी नहीं कीए उसकी गला दबाकर हत्या की गयी थी। वह दस ह ते के गर्भ से थी। दरअसलए हर मध्यमवर्गीय भारतीय परिवार बच्चों की शादी के ज़रिये यह साबित करते हैं कि हमारे बच्चों पर हमारी कितनी नकेल है। अपने बच्चों को जी.जान से पालने वाले आखिर इतने कटु और स त क्यों हो जाते हैंघू इसलिए क्योंकि नेता और इनकी व्यवस्था इन बच्चों की रक्षा करने का आश्वासन नहीं देतीघू सब जानते हैं कि विशेष विवाह अधिनियम कमज़ोर किया जा रहा है।

इस हिंसा को उकसाते हुए सभी लड़कियों के साथ लड़कों की भी सुरक्षा भूल रहे हैं या इन अपराधों से आंखें मूंदे हुए हैं। बलात्कार के चालीस फ़ीसदी केस वास्तव में बलात्कार के नहीं होते। ये वे मामले हैं जिनमें परिवार उन पुरुषों को बलात्कार के इल्ज़ाम में मुकदमे दायर करता है जिनसे परिवार की बेटियां या तो शादी कर चुकी होती हैं या करना चाहती हैं। परिवार हर कीमत पर इन शादियों को निरस्त कर लड़की को बरामद करना चाहते हैं और लड़कों को सलाखों के पीछे डालना चाहते हैं। ये लड़कियां कभी घरों में कैद कर दी जाती हैं तो कभी नारी निकेतनों में। यह सोच ही बहुत बचकानी है कि लड़कियां सुरक्षित हो जाएंगी। वह परिवार जिसका बेटा महज़ प्रेम करने के जुर्म में बलात्कार या अपहरण

संयोजन के कारण अमेरिका प्रमुख वैश्विक नौसैनिक शक्ति बना रहेगा।

अमेरिकी नौसेना के पास न केवल बहुत से जहाज़ हैंए बल्कि इसके पास कई विशालए अत्याधुनिक जहाज़ भी हैं। यूके के जहाजों की कुल सं या में कमी आने की उ मीद है। दो नये विमान वाहकों को जोड़ने और इसके पनडुब्बी बेड़े में वृद्धि से ब्रिटेन को नंबर 2 समुद्री शक्ति के रूप में स्थापित होना चाहिए।

रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत अपनी नौसैनिक उपस्थिति का विस्तार कर रहा है और उसके पास 2030 तक तीन ऑपरेटिंग विमान वाहक होने चाहिएए जो सामूहिक रूप से 110.120 विमानों को तैनात करने में सक्षम हैं।आधिकारिक रिपोर्टों से पता चलता है कि भारतीय नौसेना के पास विभिन्न प्रकार के 45 पोत निर्माणाधीन हैं।

इनमें विध्वंसक, फ़्रिगेट, जलपोत, पारंपरिक और परमाणु.संचालित पनडुब्बियां शामिल हैं। योजना 2050 तक 200 युद्धपोतों और 500 विमानों की एक मजबूत नौसेना बनाने की है। चीन की आक्रामक मुद्रा और भारत.प्रशांत क्षेत्र में बढ़ते तनाव को देखते हुए समय सीमा काफी लंबी प्रतीत होती है। सरकार को वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिक बने रहने के लिए अपने विस्तार कार्यक्रम में तेजी लाने के लिए भारतीय नौसेना को वार्षिक पूंजीगत व्यय निधि सहायता जारी रखनी चाहिए।

की सज़ा भुगत रहा होगा क्या वह चैन से जी सकता है?

भीड़ को उकसाने वाले इसका जवाब देंगे।कैसा अकेला और डरा हुआ समाज होगा वह जहां प्रेम और सद्भाव का पूरी तरह अभाव होगा और हर बेटी के मां.बाप केवल चाकू की धार तेज करने में ही लगे होंगे। जिन विचाराधीन कैदियों से भारत की जेलें भरी पड़ी हैं उनमें बड़ी सं या में ऐसे लड़के हैं और बाहर घुटन में जीतीं वे लड़कियांए समझौते का जीवन गुज़ारती हुईं। जात.बिरादरी से दूरी और नफ़्त ने समूचे समाज के सद्भाव में गहरा घाव कर दिया है और ये नेता जब.तब इस घाव को कुरेदते रहते हैं।

हैरत की बात है कि राजनीतिक दल ने घृणा की यह भाषा महिला नेताओं के हिस्से में डाल दी हैए वह भी निर्वाचित नेता के। क्या यह भी सोचा समझा हुआ है कि सद्भावना और प्रेम में यकीन रखने वाली स्त्री के मुख से ऐसी कटु बातें कहलवाई जाएं। भारत की सबसे बड़ी और लोकप्रिय पार्टी को आखिर क्यों इन हिंसक भाषणों का सहारा लेना चाहिएघू क्या उसे अपनी लोकप्रियता पर शक है या उसकी इस लोकप्रियता का आधार कमजोर हैघू जब सत्ता इस कदर असुरक्षित रहेगी तो नागरिक को उसके सुरक्षित रखने का आश्वासन राज्य की ओर से कैसे दिया जा सकता हैघू क्या जनता नए साल में अपने लिए कुछ बेहतर और नए की उ मीद कर सकती। फ़ैा लुधियानवी का शेर है.

तू नया है तो दिखा सुबह नईए शाम नईए
वरना इन आंखों ने देखे हैं नए साल कई।।



अब होनहार और मेधावी बच्चों की अंतर्राष्ट्रीय पढ़ाई के लिए आर्थिक तंगी नहीं बनेगी रुकावट

चंडीगढ़ : पंजाब की मिट्टी का कर्ज चुकाने और यहां के होनहार युवाओं के सपनों को पंख लगाने के मकसद से, समाजसेवी और ऑस्ट्रेलिया के सफल शिक्षाविद् गैरी मल्होत्रा ने एक ऐसा ऐतिहासिक कदम उठाया है, जो अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के क्षेत्र में मील का पत्थार साबित होगा। यूनिवर्सल बिजनेस स्कूल सिडनी ऑस्ट्रेलिया के मंच से उन्होंने पंजाब के मेधावी छात्रों के लिए वे रास्ते खोल दिए हैं, जिन पर चलने से उन्हें पैसे की तंगी हमेशा रोकती थी।

चंडीगढ़ में आयोजित एक समारोह में प्रतिष्ठित बुद्धिजीवियों, चिंतकों, प्रोफेसरों, प्रिंसिपलों, शिक्षकों और नामी कलाकारों ने विशेष रूप से शिरकत की। इस अवसर पर ग्रुप कॉलेज ऑस्ट्रेलिया और यूबीएसएस ऑस्ट्रेलिया के प्रेसिडेंट गैरी मल्होत्रा ने कहा कि पंजाब की असली ताकत इसकी जवानी है, और यदि इस जवानी को सही अवसर दिया जाए तो वह दुनिया फतह कर सकती है। इसी सोच के

महेनजर यूबीएसएस द्वारा होनहार छात्रों के हितों की रक्षा करने वाले कई प्रोग्राम लॉन्च किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस नेक मिशन की आवाज पंजाब के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए, लोकप्रिय अभिनेता गुरप्रीत घुग्गी को ब्रांड एंबेसडर बनाया गया है। घुग्गी साहब का व्यक्तित्व इस बात का गवाह है कि साधारण घरों के बच्चे भी बड़े सपने देख और पूरे कर सकते हैं। इस अवसर पर गैरी मल्होत्रा के विजन के तहत, नैट ऑस्ट्रेलिया ने भारत की शान प्ज रोपड़ के साथ हाथ मिलाया है। यह साझेदारी सुनिश्चित करेगी कि पंजाब के छात्रों को विश्व स्तरीय शिक्षा और तकनीकी ज्ञान मिले, ताकि वे दुनिया के किसी भी कोने में अपनी काबिलियत का लोहा मनवा सकें। उन्होंने बताया कि यूबीएसएस द्वारा जरूरतमंद, मेधावी और होनहार छात्रों और उनके माता-पिता की एक बड़ी चिंता को खत्म करने का प्रयास किया गया है। जिसके तहत '100: सेल्फ-स्पॉन्सर प्रोग्राम' छात्रों

को बिना किसी गारंटी के पढ़ाई करने का अवसर देगा। यह एक भरोसा है कि आपकी काबिलियत ही आपकी सबसे बड़ी गारंटी है। अपनी समाजसेवी संस्था 'हेल्पिंग हैंड' के माध्यम से उन्होंने 25 ऐसे मेधावी छात्रों को सालाना 100: स्कॉलरशिप देने का प्रण किया है, जिनकी गरीबी उनके सपनों के रास्ते में आती है। यह कदम सुनिश्चित करेगा कि गरीबी किसी हीरे की चमक को फीका न कर सके। इस मौके पर गुरप्रीत घुग्गी ने कहा कि मेरे लिए यह बहुत गर्व की बात है कि मैं गैरी मल्होत्रा जैसे युवा और दूरदर्शी उद्यमी के नेक मिशन से जुड़ा हूं। मलेरकोटला के एक छोटे से गांव से उठकर गैरी मल्होत्रा ने ऑस्ट्रेलिया के सिडनी, मेलबर्न और एडिलेड शहरों में करीब एक दर्जन शिक्षण संस्थान स्थापित करके सबसे बड़े ग्रुप का रुतबा हासिल किया है। मैं एक सरकारी स्कूल का पढ़ा हुआ हूं और मैंने अपनी आंखों से देखा है कि कैसे अवसरों की कमी के कारण मुझसे कहीं ज्यादा होशियार और काबिल बच्चे

जिंदगी की दौड़ में पीछे रह गए। जिनके दिमाग की दहशत पूरे स्कूल में होती थी, उन्हें घर की आर्थिक तंगी ने पढ़ाई छोड़कर पकौड़े बेचने या छोटी-मोटी दुकानों पर बैठने के लिए मजबूर कर दिया। उनकी प्रतिभा में कोई कमी नहीं थी, कमी थी तो सिर्फ एक 'अवसर' की, जो उन्हें कभी नहीं मिला। आज गैरी मल्होत्रा वही 'अवसर' बनकर आए हैं।

उनका 'सेल्फ-स्पॉन्सर' प्रोग्राम एक क्रांति है, जो हजारों माता-पिता के सिर से वह बोझ उतार देता है जो उन्हें अपने बच्चों के सपने पूरे करने से रोकता था। इससे छात्र, खासकर हमारी बेटियां, आत्मनिर्भर बनती हैं, क्योंकि जब एक बेटी पढ़ती है तो पूरा परिवार तरक्की करता है। इसके अलावा, उन 25 जरूरतमंद और मेधावी छात्रों को 'हेल्पिंग हैंड' संस्था के माध्यम से 100 प्रतिशत स्पॉन्सरशिप देना बड़ी सोच का प्रमाण है। अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन के इच्छुक पंजाब के छात्रों के लिए सीधे दाखिले वाला प्रोग्राम छात्रों और

माता-पिता के लिए बड़ी आर्थिक राहत और सुरक्षा बनेगा। गुरप्रीत सिंह ने कहा कि मैं इस महान मिशन का हिस्सा बनकर गर्व महसूस करता हूं। इस अवसर पर राज्यसभा सदस्य और चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी के चांसलर सतनाम सिंह संघू ने कहा कि आज एक शिक्षा शास्त्री होने के नाते मुझे गैरी मल्होत्रा और उनकी टीम द्वारा किए गए इस अनूठे प्रयास को देखकर बेहद खुशी और गर्व महसूस हो रहा है। मैं उन्हें इस अनूठी पहल के लिए बधाई देता हूं। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि पंजाब की धरती का एक नौजवान, जिसने खुद संघर्ष करके विदेश में सफलता हासिल की, आज अपनी मिट्टी का कर्ज चुकाने के लिए वापस लौटा है और यहां के युवाओं का भविष्य संवारने का बीड़ा उठाया है। पिछले 25 सालों से छात्रों के साथ काम करते हुए मैं एक बात पूरे यकीन के साथ कह सकता हूं कि हमारे पंजाबी युवाओं में न तो हिम्मत की कमी है और न ही जज्बे की। अगर किसी चीज की कमी

है तो वह है सही अवसरों की। जब भी उन्हें अवसर मिला है, उन्होंने देश-विदेश में पंजाब का नाम रोशन किया है। पर दुख की बात यह है कि सही अवसर और सही राह न मिलने के कारण, हमारे बहुत सारे नौजवान 'डंकी रूट' के अंधेरे में खो जाते हैं।

मुझे खुशी है कि वह स्कॉलरशिप और जरूरतमंद बच्चों को गोद लेकर उनकी भी मदद कर रहे हैं, जो आर्थिक रूप से बेहद कमजोर हैं। इस मौके पर नामी शिक्षा शास्त्री कंवलजीत सिंह ढींडसा ने कहा कि गैरी मल्होत्रा ने गांव के सरकारी स्कूल से सफर शुरू करके ऑस्ट्रेलिया में सफलता की बुलंदियों को छुआ है। गैरी मल्होत्रा द्वारा 'हेल्पिंग हैंड' संस्था के माध्यम से शुरू किए गए प्रोजेक्ट सिर्फ कारोबार नहीं, बल्कि समाज के प्रति एक बड़ी देन हैं। उनके तीन मुख्य प्रयास विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं :

100% सेल्फ-स्पॉन्सरशिप (पहले पढ़ो, कमाओ और फिर फीस दो)रु यह एक अनूठी और बहुत ही

असरदार सोच है, जिससे काबिल छात्रों पर पढ़ाई के दौरान फीस का कोई बोझ नहीं रहेगा। यह सुनिश्चित करेगा कि कोई भी मेधावी बच्चा पैसे की कमी के कारण उच्च शिक्षा से वंचित न रहे। संस्था से सीधा संपर्क छात्रों को सीधे इंस्टीट्यूट से जोड़ने का तरीका पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता और विश्वास पैदा करता है। इससे छात्रों को फीस और खर्चों में बचत और पारदर्शिता मिलती है, जिससे वे गुमराह होने से बच जाते हैं।

गरीब और मेधावी बच्चों के लिए मुफ्त अंतर्राष्ट्रीय शिक्षारु बुद्धिमान बच्चों को 100 प्रतिशत स्पॉन्सरशिप के माध्यम से मुफ्त पढ़ाई करवा कर उनके भविष्य को संवारना है। गैरी मल्होत्रा, गुरप्रीत घुग्गी, सतनाम संघू जैसी शख्सियतें हमारे समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं, जिन्होंने साधारण पृष्ठभूमि से उठकर बड़ी मंजिलें हासिल की हैं। मुझे पूरा यकीन है कि गैरी मल्होत्रा का यह नेक प्रयास पंजाब के हजारों युवाओं का भविष्य रोशन करेगा। मैं इस शानदार

प्रोजेक्ट के लिए उन्हें दिल से मुबारकबाद देता हूं और कामना करता हूं कि वह इस मिशन को और भी दिलेरी और होसले के साथ आगे बढ़ाएं। इस अवसर पर यूबीएसएस और जीसीए ऑस्ट्रेलिया के वाइस चांसलर प्रो. एलन बोयल जेम्स, पूर्व वाइस चांसलर डॉ. बी.एस घुम्मन, अमेरिका के सफल कारोबारी राजा बोपाराय, मुख्यमंत्री पंजाब के पूर्व ओएसडी मनजीत सिंह सिद्धू, आईआईटी रोपड़ की सीईओ राधिका तरिखा समेत कई वक्ताओं ने संबोधित किया। जबकि कार्यक्रम में पंजाब महिला आयोग की चेयरपर्सन राज लाली गिल, नामी अभिनेत्री और समाजसेवी सोनिया मान, गायक मनकीरत औलख, करमजीत अनमोल, सलीम सिकंदर, फिल्म अभिनेता कुलतार चीमा, लव गिल और बनिंदर बनी, स्वदेश, जरनैल सिंह, आईबीसी चंडीगढ़ से प्रोफेसर रौणकी राम, होप ट्रेनिंग कॉलेज के ऑस्ट्रेलियन रॉबी बैनीपाल, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला से डॉ. गुरुमुख सिंह उपस्थित थे।

युद्ध नशों विरुद्ध : नशामुक्त पंजाब का सपना हो रहा पूरा

चंडीगढ़ : पंजाब को नशामुक्त बनाने का जो संकल्प मुख्यमंत्री स. भगवंत सिंह मान ने लिया है उस संकल्प की पूर्ति के लिए युद्ध नशयां विरुद्ध अभियान शुरू किया गया। इस अभियान ने करोड़ों परिवारों के मन में यह आस जगा दी है कि पंजाब नशामुक्ति की तरफ बढ़ चुका है और अब हमारा प्रदेश अब नशे के कलंक को धो चुका है। बीते एक मार्च को मान सरकार ने नशीले पदार्थों की बिक्री पर पूरी तरह रोक लगाने के लिए युद्ध नशे दे विरुद्ध लांच किया। पंजाब पुलिस के प्रभावी कदमों से इस अभियान में बड़ी सफलता मिली है। पंजाब से नशे के कारोबारियों का समूल विनाश किया जा रहा है। युद्ध नशों विरुद्ध के तहत जहां नशा तस्करों के घरों पर बुलडोजर चलाए गए वहीं नशेड़ी युवाओं के पुनर्वास के लिए सरकार ने अहम कदम उठाए। इन कदमों की बदौलत अब रंगले पंजाब का सपना पूरा होता दिख रहा है। मुख्यमंत्री भगवंत मान का स्पष्ट कहना है कि किसी के घर का चिराग बुझाकर अगर कोई तस्कर ये सोचता है कि वे अपने घर को सुंदर लाइटिंग से सजा लेगा तो ये उसकी गलतफहमी है। नशा तस्करों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। आंकड़ों की बात करें तो पंजाब में मादक पदार्थों के खिलाफ जारी राज्य-व्यापी अभियान के तहत अब तक 22 हजार से ज्यादा तस्करों को गिरफ्तार किया जा चुका है। 138 दिनों में गिरफ्तारियों की संख्या 22,377 तक पहुंच गई। राज्य सरकार ने वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय कैबिनेट उप-समिति का गठन किया है जो मादक

पदार्थों के विरुद्ध इस अभियान पर नजर रख रही है। राज्य से नशे के उन्मूलन के लिए तीन-आयामी रणनीति दृ प्रवर्तन, नशामुक्ति और रोकथाम (ईडीपी) दृ लागू की गई है। पंजाब के कई जिलों में पंचायत स्तर पर नशा तस्कर और अपराधियों का बहिष्कार करने की बात हो ही है। इस तरह के फैंसले ड्रग के खिलाफ लड़ाई को मजबूती दे रहे हैं। नशे का व्यापार करने वाले के खिलाफ शुरू किए गए राज्यव्यापी अभियान में मान सरकार को अब आमजन का भी साथ मिल रहा है। पंजाब पुलिस ने नशे के सौदागरों को खिलाफ जमकर अभियान चलाया है और इसमें बड़ी सफलता मिली है। नशा तस्करों के घरों पर बुलडोजर चल रहे हैं। किसी ने नहीं सोचा होगा कि ऐसा समय भी आएगा, जब तस्करों के घरों पर बुलडोजर चलाए जाएंगे। पहले रिहैबिलिटेशन सेंटरों का बहुत बुरा हाल था। वहां लोगों को चेन से बांधकर कर रखा जाता था, उन्हें मारा-पीटा जाता था। अब यह सिस्टम खत्म हो गया है। अब सारे नशामुक्ति केंद्र वातानुकूलित बना दिए गए हैं और सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं। राज्य सरकार ने नोशों की रीढ़ की हड्डी तोड़ दी है और अब वह दिन दूर नहीं, जब पंजाब में से नशों का मुकम्मल खात्मा हो जाएगा। नशा मुक्ति यात्रा के तहत राज्य के हर गाँव और कस्बे तक पहुँच की जा रही है ताकि नशों के विरुद्ध इस जंग में ज्यादा से ज्यादा लोगों को शामिल करके पंजाब को पूरी तरह नशा मुक्त बनाया जा सके।

पंजाब के स्कूलों में बच्चों को जल्द मिलेगा ब्रेकफास्ट, सीएम मान बोले- कैबिनेट में लाएंगे प्रस्ताव

चंडीगढ़ : तमिलनाडु दौरे पर गए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा है कि राज्य के सरकारी स्कूलों में जल्द ही 'ब्रेकफास्ट स्कीम' शुरू की जाएगी। सीएम मान ने मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन के साथ मिलकर शहरी प्राथमिक स्कूलों में चल रही ब्रेकफास्ट स्कीम का जायजा लिया। उन्होंने बच्चों को भोजन परोसा और उनके साथ बैठकर नाश्ता भी किया। मान ने कहा कि पंजाब सरकार इस योजना को लागू करने पर कैबिनेट में चर्चा करेगी। उनका कहना था कि इससे बच्चों की पोषण स्थिति और शिक्षा दोनों को लाभ होगा। इस मौके पर उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भी निशाना साधा। मान ने कहा कि "देश में नेता जुमलेबाजी कर रहे हैं, लेकिन अच्छे दिन अभी तक नहीं आए। सच ही हमेशा



आगे चलता है, भाषणों से देश नहीं बनता।" मुख्यमंत्री मान ने कहा कि पंजाब खाद्यान्न उत्पादन में अग्रणी है और राज्य में अनाज की कोई कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि अब तमिलनाडु का खाना राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय हो चुका है। पंजाब के हर कस्बे में मसाला डोसा, उपमा और पानीपुरी आसानी से मिल जाते हैं। हालांकि, पंजाबी खाना थोड़ा भारी माना जाता है।

पंजाब में चिंता का विषय बन रही है हृदय रोगी बच्चों की बढ़ती संख्या

चंडीगढ़ : आर.टी.आई इंफॉर्मेशन के अनुसार पंजाब में हृदय रोग से पीड़ित बच्चों का इलाज का दायित्व पंजाब सरकार स्वयं उठा रही है। जो बच्चे हृदय रोग से पीड़ित हैं ,उनके लिए यह सरकार बड़ी राहत के रूप में आ रही है। पिछले तीन वर्षों में पंजाब का स्वास्थ्य विभाग हृदय रोगी बच्चों के लिए विशेष अभियान चला रहा है। हृदय के ब्लॉकज को खोलने के लिए पंजाब के विशेषज्ञ अस्पतालों से अनुबंध किया है, साथ ही सीरियस केसों के लिए गुरुद्वारे के स्पेशल अस्पतालों से भी अनुबंध किया हुआ है। पंजाब में जिन बच्चों के हृदय में ब्लॉकज है, उनके लिए मेट्रो सिटी में खास प्रबंध किए जा रहे हैं, सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार पंजाब की पी.जी.आई में 528 केस अन्य विभागों को ट्रांसफर हो चुके हैं जिनमें 7 फीसदी से ज्यादा अति गंभीर हैं जबकि 93 फीसदी नॉर्मल है। मरीजों की लंबी लिस्ट होने के कारण इनकी बारी आने में 6 से 7 महीने तक लग जाते हैं। वहीं विभिन्न विभिन्न विभागों में काम करने वाले हृदय रोग विशेषज्ञ दिनेश चड्ढा का कहना है कि हमारे पास हृदय में छेद वाले बच्चों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है , जो गंभीर चिंता का विषय है। हम एक दिन में केवल 5 से 6 बच्चों का ही ऑपरेशन कर पाते हैं। अन्य राज्यों से भी यहां हृदय रोगी बच्चे आते हैं। इसी कारण स्थानीय बच्चों के इलाज में भी समय तो लगता ही है। वहीं डॉक्टर प्रतिभा सिंह का कहना है कि कभी-कभी इमरजेंसी में भी ऑपरेशन करना पड़ता है। आरटीआई में पंजाब



सरकार जो सूचनाएं दे रही है उसको कोर्ट में चैलेंज किया गया है ,स्कूली बच्चों के प्राथमिकता से इलाज के लिए हाईकोर्ट में एक रिट अभी-अभी डाली गई है ,जिसका फैसला अभी आना है। पंजाब के नामी अस्पताल हाईकोर्ट में फर्जी एफिडेविट डाल रहे हैं , जिसका सुप्रीम कोर्ट ने कड़ा नोटिस लिया, कई प्राइवेट अस्पतालों के लाइसेंस रद्द किए जा रहे हैं ,कई नए अस्पतालों को कुछ महीनों तक रद्द किया जा रहा है। पंजाब के सतगुरु राम गुरु सुपर स्पेशलिस्ट अस्पताल लुधियाना में बच्चों को भर्ती नहीं किया जाता, क्योंकि वह पंजाब सरकार की सरकारी लिस्ट में नहीं है। राष्ट्रीय बाल विकास योजना की गाइडलाइन के अनुसार 31 बीमारियों के लिए बच्चों की स्क्रीनिंग की जाती है। एक

बच्चे के दिल के इलाज पर सरकार 70 हजार से एक लाख 20 हजार रुपए खर्च कर रही है। जिन बच्चों के दिल में छेद है ,उनकी स्क्रीनिंग, इलाज और सर्जरी के लिए 18 वर्ष की उम्र होने तक फॉलोअप किया जाता है। आम आदमी पार्टी फिरोजपुर के एक नेता ने कहा कि सरकार की यह स्कीम गरीब लोगों के लिए वरदान साबित हो रही है। गरीब बच्चों को महंगे अस्पतालों में बढ़िया इलाज मिल रहा है ,प्राइवेट हॉस्पिटलों में भी बच्चों का बढ़िया इलाज हो रहा है,दिल की बीमारी से जूझ रहे बच्चों के इलाज का खर्च सरकार स्वयं उठा रही है। वहीं मास्टर मदनलाल का कहना है कि आम आदमी पार्टी का यह अच्छा कदम है ,जिससे समाज के हर वर्ग को मदद मिल रही है। कागजों पर तो सभी योजनाएं अच्छी लगती हैं। यह योजना भी ऐसी ही है। अनेक बच्चों का इस योजना में इलाज भी हुआ है और अब वे स्वस्थ भी हैं लेकिन साथ ही अब यह शिकायत आई है कि इस योजना में भी राजनीतिक दखलंदाजी होने लगी है। अब आरोप है कि विधानसभा के सदस्य बच्चों के हृदय के छेद को बंद करने के लिए जिनकी सिफारिशें करते हैं, इलाज में उन्हीं बच्चों को प्राथमिकता दी जाती है। वहीं पंजाब के कई मेडिकल विशेषज्ञ डॉक्टरों का कहना है कि हमारी रिपोर्ट को कोई महत्व नहीं दिया जाता ।वहीं नूरपुर बेदी के एक स्पेशलिस्ट ने सीधे सीधे भगवंत मान पर आरोप लगाया कि पिछले वर्ष अगस्त में मैंने एक दलित जाति के पांचवी कक्षा के बच्चे की सर्जरी की सिफारिश की थी, लेकिन वहां के

विधायक की सिफारिश ना होने के कारण बच्चे की मौत हो गई । जिसके लिए भगवंत मान सरकार को दोषी मानकर उन पर कानूनी कार्रवाई होना चाहिए। बताया गया है कि धर्मकोट के 14 वर्षीय दलित बच्चे को हृदय में ब्लाकेज की शिकायत थी, जिसके इलाज के लिए धर्मकोट की पंचायत ने सीधे मुख्यमंत्री मान से अनुरोध किया था ,लेकिन दस महीने तक उसकी फाइल सरकारी दफ्तरों में बंद रही, जिसके कारण समय पर इलाज न मिलने से उस बच्चे की मृत्यु हो गयी। गर्भवती महिलाओं के गलत खानपान, शराब पीने और सिगरेट का सेवन करने से बच्चों के दिल में छेद होने की ज्यादा संभावनाएं होती है । छोटे-छोटे छेदों को सलंग के द्वारा बंद कर दिया जाता है जबकि बड़े-बड़े छेदों को भरने के लिए ओपन हार्ट सर्जरी करनी पड़ती है। वही विशेषज्ञों का कहना है कि पंजाब में 1000 बच्चों के पीछे 6 केस ऐसे आ रहे हैं। इन बाल हृदय रोगियों में से कई के पिता को कोई बीमारी नहीं होती। लेकिन यदि मां के हृदय में कोई बीमारी है तो उसका प्रभाव बच्चों के शरीर पर पड़ रहा है। यदि माता गर्भावस्था में दवाइयां ले रही है तो उसका असर भी बच्चों पर पड़ सकता है। यह देखा गया है कि यदि परिवार की स्त्रियां सिगरेट और शराब का प्रयोग करती है तो उनके बच्चों को ऐसी समस्या आ सकती है। वहीं डॉक्टर बागी का कहना है कि यदि छोटी उम्र में छेद भर जाए तो हृदय का वाल्व सही हो जाता है और बच्चों का विकास भी ठीक होता है।

भारत से इंडोनेशिया लौटा दुर्लभ ऑरंगुटान, दो साल पहले अवैध तस्करी से कराया गया था मुक्त

भुवनेश्वर २४/१० (संवाददाता): भारत और इंडोनेशिया के बीच वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग का महत्वपूर्ण उदाहरण सामने आया है। नवंबर 2024 में भारत में अवैध वन्यजीव व्यापार से बचाए गए सुमात्राण प्रजाति के एक ऑरंगुटान को करीब दो साल बाद उसके मूल देश इंडोनेशिया वापस भेज दिया गया है। भारत और इंडोनेशिया की वन्यजीव संरक्षण एजेंसियों तथा सीआईटीईएस प्रबंधन प्राधिकरणों के संयुक्त प्रयासों से इस प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूरा किया गया। ऑरंगुटान को गुजरात से विशेष व्यवस्था के तहत इंडोनेशिया भेजा गया, जहां वह 19 अक्टूबर 2026 को मेदान स्थित कुआलानामु अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचा। इस अवसर पर इंडोनेशिया के वानिकी मंत्रालय की ओर से स्वागत समारोह आयोजित किया गया। भारत के महावाणिज्य दूतावास के अधिकारियों ने भी कार्यक्रम में हिस्सा लिया। इस पहले को लुप्तप्राय वन्यजीवों की सुरक्षा और अवैध तस्करी के खिलाफ बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है।

इस ऑरंगुटान को भारतीय वन्यजीव अधिकारियों ने 12 नवंबर 2024 को महाराष्ट्र के ठाणे जिले के डोंबिवली इलाके से बचाया था। इंडोनेशिया के वानिकी मंत्रालय के अनुसार, बचाव के समय यह ऑरंगुटान एक अपार्टमेंट में अवैध रूप से रखा गया था। उस समय इसकी उम्र लगभग 18 से 20 महीने थी। यह सुमात्राण ऑरंगुटान प्रजाति का नर शिशु था। इस प्रजाति का वैज्ञानिक नाम पोंगो अबेली है। ऑरंगुटान को पहले रॉकी के नाम से जाना जाता था। इंडोनेशिया वापसी के बाद इसका नया नाम हीरा रखा गया है, जिसका अर्थ बहुमूल्य रत्न होता है। अधिकारियों के अनुसार, यह जीव अंतरराष्ट्रीय अवैध वन्यजीव व्यापार का शिकार हुआ था। गुजरात में करीब दो साल तक हुई देखभाल बचाव के बाद ऑरंगुटान को गुजरात के जामनगर स्थित वन्यजीव बचाव एवं पुनर्वास केंद्र में रखा गया था। यहां विशेषज्ञ पशु चिकित्सकों और वन्यजीव संरक्षण कर्मचारियों की देखरेख

में उसका उपचार और पुनर्वास किया गया। भारतीय अधिकारियों ने उसके स्वास्थ्य, पोषण और रहने के लिए उपयुक्त वातावरण की व्यवस्था सुनिश्चित की। नज़्से देखें कम उम्र में अवैध रूप से कैद किए गए वन्यजीवों को विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। ऐसे जीवों को दोबारा प्राकृतिक वातावरण के अनुकूल बनाने के लिए लंबे समय तक निगरानी करनी पड़ सकती है। करीब दो वर्षों की देखभाल के बाद ऑरंगुटान को इंडोनेशिया वापस भेजने की प्रक्रिया पूरी की गई। भारतीय दूतावास की ओर से जारी जानकारी के अनुसार, ऑरंगुटान को गुजरात से इंडोनेशिया भेजा गया। 19 अक्टूबर 2026 को वह उज्जरी सुमात्रा के मेदान स्थित कुआलानामु अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचा। इंडोनेशिया के वानिकी मंत्रालय ने उसके आगमन पर स्वागत कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में मेदान स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास के अधिकारी भी शामिल हुए। भारतीय दूतावास ने इस सफल



वापसी को दोनों देशों के बीच मजबूत संबंधों और संकटग्रस्त वन्यजीव प्रजातियों की रक्षा के साझा संकल्प का प्रतीक बताया। नियमों के तहत पूरी हुई वापसी ऑरंगुटान को वापस भेजने की प्रक्रिया में दोनों देशों के सीआईटीईएस प्रबंधन प्राधिकरणों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। सीआईटीईएस यानी लुप्तप्राय वन्य जीवों और वनस्पतियों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि वन्यजीवों और पौधों का अंतरराष्ट्रीय व्यापार उनकी प्रजातियों के अस्तित्व के लिए खतरा न बने। ऑरंगुटान जैसी

को वापस लेने की शर्त नहीं रखी। इस कदम को दोनों देशों के बीच वन्यजीव संरक्षण सहयोग और सद्भावना के रूप में देखा जा रहा है। भारतीय अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि इस पहल का मुख्य उद्देश्य लुप्तप्राय वन्यजीव को सुरक्षित तरीके से उसके मूल देश वापस पहुंचाना था। नज़्से देखें इंडोनेशिया में पुनर्वास की प्रक्रिया शुरू इंडोनेशिया पहुंचने के बाद ऑरंगुटान को तुरंत जंगल में नहीं छोड़ा गया है। उसे उज्जरी सुमात्रा के लंगकट क्षेत्र में स्थित सुमात्राण रेस्ज्यू एलायंस के पुनर्वास केंद्र में रखा गया है। यहां विशेषज्ञ उसके स्वास्थ्य और व्यवहार की निगरानी करेंगे। प्राकृतिक वातावरण में लौटने से पहले ऑरंगुटान का पर्याप्त रूप से स्वस्थ और आत्मनिर्भर होना जरूरी है। विशेषज्ञों की देखरेख में उसके भोजन जुटाने, पेड़ों पर चढ़ने और प्राकृतिक परिस्थितियों के अनुकूल होने की क्षमता का आकलन किया जाएगा। इसके बाद ही उसे जंगल में छोड़ने से संबंधित निर्णय लिया जा सकेगा। ओडिशा से बचाए गए पांच ऑरंगुटान भी लौटेंगे इस सफल

अभियान के बाद भारत और इंडोनेशिया के अधिकारी पांच अन्य ऑरंगुटान की वापसी की प्रक्रिया पर भी काम कर रहे हैं। इन पांच शिशु ऑरंगुटान को सितंबर 2026 में ओडिशा से बचाया गया था। वर्तमान में इन्हें भुवनेश्वर के नंदनकानन प्राणी उद्यान में रखा गया है, जहां विशेषज्ञों की निगरानी में आवश्यक पशु चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। हालांकि, इन वन्यजीवों को इंडोनेशिया भेजने से पहले उनकी प्रजाति और मूल स्थान की पुष्टि आवश्यक है। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय नियमों के तहत सभी जरूरी प्रक्रियाएं पूरी की जाएंगी। भारतीय दूतावास नवंबर 2026 में इंडोनेशिया के वन्यजीव विशेषज्ञों के भारत दौरे की व्यवस्था में भी सहयोग कर रहा है। ऑरंगुटान विश्व की संकटग्रस्त वन्यजीव प्रजातियों में शामिल हैं। इनका प्राकृतिक आवास मुख्य रूप से इंडोनेशिया और मलेशिया के वर्षावनों में पाया जाता है। विशेष रूप से सुमात्राण ऑरंगुटान का अस्तित्व जंगलों की कटाई, प्राकृतिक आवास के नुकसान और अवैध वन्यजीव व्यापार के कारण खतरे में है। कम उम्र के

ऑरंगुटान को अवैध रूप से पकड़कर बेचने की घटनाएं उनके संरक्षण के लिए गंभीर चुनौती पैदा करती हैं। वन्यजीव विशेषज्ञों का कहना है कि इस प्रकार के अपराधों पर नियंत्रण के लिए देशों के बीच खुफिया जानकारी साझा करना और कानूनी सहयोग आवश्यक है। वन्यजीव संरक्षण में सहयोग की मिसाल भारत से इंडोनेशिया वापस भेजे गए इस ऑरंगुटान की कहानी अवैध तस्करी से बचाव, लंबे उपचार और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का उदाहरण बन गई है। नवंबर 2024 में बचाए जाने से लेकर अक्टूबर 2026 में स्वदेश वापसी तक विभिन्न वन्यजीव एजेंसियों ने इसकी सुरक्षा और देखभाल में योगदान दिया। अब इंडोनेशिया के विशेषज्ञ इसके पुनर्वास की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। इस सफल अभियान से यह संदेश मिलता है कि संकटग्रस्त प्रजातियों की सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय समन्वय आवश्यक है। दोनों देशों का यह प्रयास भविष्य में अन्य अवैध रूप से तस्करी किए गए वन्यजीवों की सुरक्षित वापसी के लिए भी उपयोगी उदाहरण बन सकता है।

रेखा पांडेय ने एमसीएल में निदेशक (मानव संसाधन) का पदभार ग्रहण किया

संबलपुर २४/१० (संवाददाता): श्रीमती रेखा पांडेय ने शुक्रवार शाम महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड (एमसीएल) के निदेशक (मानव संसाधन) का पदभार ग्रहण किया। श्रीमती पांडेय को मानव संसाधन प्रबंधन, कार्मिक प्रशासन एवं औद्योगिक संबंधों के क्षेत्र में 32 वर्षों से अधिक का व्यापक अनुभव है। इससे पूर्व, वह कोल इंडिया लिमिटेड मुख्यालय में महाप्रबंधक (मानव संसाधन) के पद पर कार्यरत थीं। उन्होंने सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) में महाप्रबंधक (कल्याण) के रूप में भी अपनी सेवाएं दी हैं। मानव



संसाधन एवं औद्योगिक संबंधों के क्षेत्र में उन्हें दो दशकों से अधिक का अनुभव प्राप्त है।

श्रीमती पांडेय ने रांची स्थित जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विस (एज्सआईएसएस) से

कार्मिक प्रबंधन में एमबीए की उपाधि प्राप्त की है। साथ ही उन्होंने जयपुर के महारानी कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातक (ऑनर्स) की शिक्षा भी प्राप्त की है। अपनी व्यावसायिक जिम्मेदारियों के अतिरिक्त, उन्होंने मानव संसाधन प्रबंधन से जुड़े विभिन्न संगठनों यथा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पर्सनल मैनेजमेंट (एनआईपीएम) और इंडियन सोसाइटी फॉर ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट (आईएसटीडी) में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वह फोरम ऑफ वूमन इन पब्लिक सेक्टर की पदाधिकारी भी हैं। श्रीमती पांडेय का व्यापक अनुभव और कर्मचारी-केंद्रित नेतृत्व एमसीएल में मानव संसाधन एवं औद्योगिक संबंधों से जुड़े कार्यों को और सुदृढ़ करने, कर्मचारी कल्याण को बढ़ावा देने तथा कंपनी की निरंतर प्रगति एवं उत्कृष्टता में योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

तीरंदाजी में भारतीय बेटियों का कमाल, पायल और शीतल ने जीता रजत

नागोया/भुवनेश्वर= ओडिशा की तीरंदाज पायल नाग और उनकी जोड़ीदार शीतल देवी ने बुधवार को नागोया में एशियाई पैरा खेलों में महिला कंपाउंड युगल स्पर्धा में फाइनल हारने के बाद रजत पदक जीता। शीतल, जो बिना हाथों के पैदा हुई थीं, और पायल, जो चार पैरों से विकलांग थीं, स्वर्ण-पदक मैच में चीन की जू जुएकिंग और झाओ जिंग से 141-150 से हार गईं। 19 वर्षीय भारतीयों ने शुरुआती अंत के बाद अपने चीनी विरोधियों के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए संघर्ष किया, प्रतियोगिता के शेष भाग के लिए कैच-अप खेला। पेरिस पैरालिंपिक की कांस्य पदक विजेता शीतल अधिक सुसंगत थी, उसने चार 10 का स्कोर किया, लेकिन एशियाई खेलों में पदार्पण करने वाली पायल अपने साथी की सटीकता



की बराबरी नहीं कर सकी, और अपने अंतिम तीर पर 7 के साथ समाप्त होने से पहले केवल 9 और 8 का ही प्रबंधन कर पाईं। वह शीतल का इस स्पर्धा में लगातार दूसरा रजत पदक था, वह सरिता देवी के साथ जोड़ी बनाते हुए खेलों के पिछले संस्करण में उपविजेता रही थीं। वह व्यक्तिगत स्पर्धा में भी स्वर्ण पदक की दौड़ में हैं। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के

लोइधर गांव की रहने वाली शीतल का जन्म फोकोमेलिया के साथ हुआ था, जो एक दुर्लभ जन्मजात बीमारी है, जिसके कारण उनकी भुजाएं पूरी तरह से अविक्सित थीं। पायल को आठ साल की उम्र में एक जीवन-परिवर्तनकारी दुर्घटना का सामना करना पड़ा जब वह 11,000 वोल्ट की उच्च-तनाव बिजली लाइन के संपर्क में आ गई, जिसके परिणामस्वरूप

उसके सभी चार अंग कट गए। ओडिशा की यह चतुर्भुज विकलांग महिला इस साल अप्रैल में तब सुखियों में आई जब उसने बैंकॉक में विश्व तीरंदाजी पैरा सीरीज में स्वर्ण पदक जीतकर शीतल को चौंका दिया।

इस बीच, टोमन कुमार और श्याम सुंदर स्वामी की भारतीय जोड़ी कंपाउंड पुरुष युगल में चीन के एं झिनलियांग और झंग यिचेंग से 153-154 से हारकर कांस्य पदक से चूक गईं। कुमार को अपने बाएं पैर के विच्छेदन के बाद स्थायी शारीरिक हानि हुई है, जबकि स्वामी को लोकोमोटर हानि है जो उनके निचले अंगों की गतिशीलता को प्रभावित कर रही है।

आय से अधिक संपत्ति मामले में सरकारी एईई तपन सेठी गिरफ्तार

जाजपुर २४/१० (संवाददाता): ओडिशा सरकार के एक अभियंता से जुड़े सात ठिकानों पर की गई छापेमारी के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। इस कार्रवाई के दौरान आरोपी के पास तीन बहुमंजिला इमारतें, एक फार्महाउस, तीन कीमती भूखंड और लगभग 750 ग्राम सोना होने का खुलासा हुआ है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि जाजपुर जिले के बड़ाचना उप-मंडल में सड़क एवं मकान निर्माण विभाग में सहायक अधिशासी अभियंता (एईई) तपन सेठी को आय के ज्ञात स्रोतों से अधिक संपत्ति अर्जित करने के मामले में गिरफ्तार किया गया है।

तीन बहुमंजिला मकान, कटक में एक फार्महाउस, भुवनेश्वर और कटक में तीन कीमती भूखंड और 747 ग्राम सोना मिला। अधिकारियों के अनुसार, तलाशी के दौरान बैंकों और डाकघर में लगभग 21 लाख रुपये की जमा पूंजी, दो कारें, दो मोटरसाइकिलें और घर के अन्य कीमती सामान भी मिले हैं। अधिकारियों ने बताया कि कटक सतर्कता प्रकोष्ठ थाने में सेठी के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया, जिसके बाद उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

अधिशासी अभियंता के रूप में कार्यरत थे।

आरएसपी में 'नेतृत्व के सीख-डॉ. सनक मिश्र के साथ चर्चा' विषय पर विशेष सत्र आयोजित

राउरकेला २४/१० (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आर.एस.पी.) के गोपबन्धु ऑडिटोरियम में 'नेतृत्व के सीख-डॉ. सनक मिश्र के साथ चर्चा' शीर्षक से एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में आर.एस.पी. के निदेशक प्रभारी, श्री आलोक वर्मा मुख्य अतिथि थे, जबकि पूर्व प्रबंध निदेशक डॉ. सनक मिश्र ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार रखे। आर.एस.पी. के पूर्व निदेशक प्रभारी, डॉ. अतनु भौमिक सन्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस सत्र में भाग लेने वाले लगभग 500 कर्मचारियों को तीन विशिष्ट नेतृत्वकर्ताओं के अनुभवों से सीखने का अवसर मिला। अपने संबोधन में डॉ. मिश्र ने प्रतिभागियों को एक असाधारण यात्रा पर ले जाते हुए न केवल 2000 के दशक के शुरुआती



वर्षों में राउरकेला इस्पात संयंत्र के ऐतिहासिक कायाकल्प की गाथा साझा की, बल्कि नेतृत्व की मूल अवधारणा और एक सच्चे नेता के गुणों पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नेतृत्व परिस्थितियों के अनुरूप होता है और इसे सामान्य सूत्रों के बजाय अपने परिवेश की विशिष्ट वास्तविकताओं के आधार पर विकसित किया जाना चाहिए। नेतृत्व के मूलभूत स्तंभों की व्याख्या करते हुए डॉ. मिश्र ने कहा कि सच्चे नेतृत्व की शुरुआत व्यक्ति के अंदर से होती है, जिसकी नींव मूल्यबोध,

संस्कृति, विरासत और परंपराओं पर टिकी होती है। दूसरों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए अपनी सोच, व्यवहार और कार्यों की शक्ति का प्रभावी उपयोग करना ही नेतृत्व का सार है। उन्होंने कहा, 'आज ऑनकडों और सूचनाओं की प्रचुरता है, लेकिन सच्चे नेतृत्व के लिए प्रज्ञा अर्थात गहन बोध आवश्यक है। यही बोध एक नेता को विभिन्न तथ्यों के बीच संबंध स्थापित करने, नवाचार को साकार करने और अल्पकालिक समाधानों तक सीमित रहने के बजाय एक

सफल रणनीति तैयार करने में सक्षम बनाता है।' कार्यक्रम में एक विचार-विमर्श सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें कई युवा कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए महत्वाकांक्षा, खुशी, प्रेरणा और व्यक्तिगत जिम्मेदारी से लेकर प्रतिभा को बनाए रखने तथा नेतृत्व में महिलाओं की भूमिका जैसे विविध विषयों पर प्रश्न पूछे। डॉ. मिश्र ने प्रत्येक प्रश्न का गहन विवेक के साथ उजर देते हुए विषयों के विभिन्न पहलुओं पर व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। डॉ. मिश्र द्वारा प्रस्तुत नेतृत्व के दार्शनिक

आधार को डॉ. अतनु भौमिक ने शॉप ज़्लोर पर अपने 36 वर्षों के अनुभव से प्राप्त व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से और अधिक प्रभावी बनाया। अपने संबोधन में डॉ. भौमिक ने कर्मचारियों को कठिन समस्याओं के समाधान की दक्षता विकसित करने, परिवर्तन का नेतृत्व करने का साहस रखने, निरंतर सीखते रहने के लिए विनम्र बने रहने तथा सभी को साथ लेकर चलने के लिए संवेदनशीलता अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा, 'राउरकेला इस्पात संयंत्र को सेल के मुकुट का रत्न बनाए रखना आपकी जिम्मेदारी है।' डॉ. मिश्र के ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी सत्र के लिए उनके प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए श्री आलोक वर्मा ने कहा कि संयंत्र के कर्मचारी और उनके परिवार डॉ. मिश्र के प्रति सदैव ऋणी रहेंगे।

AFFIDAVIT
I, SWAPNIKA BEHERA, aged about 24 years, D/o.Dillip Kumar Behera, resident of Qrs. No. C2L2-100, Chhend Colony, Rkl-769015, P. S. - Chhend, Dist:Sundargarh, Odisha, declare by this affidavit No-A/38, Dated:28/8/26, that now my father shall be known as DILLIP KUMAR BEHERA for all future purposes.